राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 15.00 संख्या 36
नागराज और पापराज
नागराज का एक पोस्टर मुफ्त

लेखकः- हनीफ अजहर
सम्पादकः- मनीष गुप्ता
कलानिर्देशनः- प्रताप मुलीक
चित्रः- मिलींद मिसाल और विट्ठल कांबले

WONDER COUNTRY के नाम से प्रसिद्ध देश मिस्र

मिस्र के WONDER रहस्यमयी पिरामिड–

इन्सान की पहुंच से दूर ... बहुत दूर।

इसी सर्पमठ में था आज वार्षिक महोत्सव सा माहौल–
अवसर था सर्पमठ के महाधीश के पद पर एक सर्पबालक को बिठाये जाने का–
सैकड़ों अनुभवी सर्पों के होते हुए आखिर एक सर्प बालक को महाधीश के पद पर क्यों बिठाया जा रहा है?
ये साधारण सर्प बालक नहीं है मूर्ख, बल्कि 3000 वर्षों में एक पैदा होने वाला…
ओह!
… दिव्य सर्पबालक है! हम सबके लिए पूजनीय!
दिव्य सर्पबालक के महाधीश बनाये जाने की खुशी का माहौल सर्पमठ के ज़र्रे-ज़र्रे पर व्याप्त था..
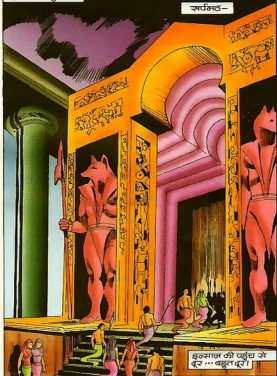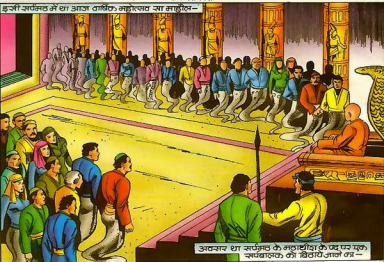
वहीं मुर्दनी छाई हुई थी इस शैतानी दुनिया में–
निसंदेह इस कलयुगी दुनिया पर तुम्हारा राज हो सकता है पापराज...
...लेकिन तुम्हारी राह में सबसे बड़ी अड़चन है सर्प-मठ का मठाधीश दिव्यबालक... आनेवाले समय में वह तुम्हारे काल का कारण बन सकता है।
सांप सा फुंफकारा पापराज–
अपने काल को अपने हाथों से खत्म कर डालूंगा मैं।
ऐसा कभी मत करना अगर तुमने उसे मारने की कोशिश की तो तुम स्वयं भी मारे जाओगे।
पहला उपाय है उसे मनुष्य रक्त पिला दो, वह स्वयं समाप्त हो जायेगा और दूसरा उपाय...
पूरी न होने दी पापराज ने अपने देवता की बात–
बस पहला उपाय ही काफी है देवता, उसे मनुष्य रक्त पिलाने का प्रबंध करता हूं मैं।

एक बात और ध्यान रखना पापराज ... जो भी उस दिव्य बालक के सम्पर्क में आयेगा, वह उसी का होकर रह जायेगा।
इतना कहकर चुप हो गए देवता।
और पापराज—
दिव्य बालक को यहां लाना होगा और इसके लिए मुझे सम्पर्क बनाना होगा टामी टंग से।
स्विट्जरलैण्ड शहर के बीचो-बीच शान से अपना सिर उठाये खड़ी स्विस बैंक की यह शानदार इमारत—
SWISS BANK
... जिस की तरफ खतरा बनकर बढ़ रहे थे सूर्य के समान दहकते वे रोशनी के शोले ...
SWISS

पलभर में ही जो बन गये थे उपस्थित जनसमूह की जिज्ञासा का केन्द्र—
कैसे हैं ये चमकदार गोले?
क्या मतलब है इनका?
मतलब को मारो गोली और ये सोचो कि ये बैंक की तरफ क्यों बढ़ रहे हैं?
देखने वाले देखते ही रह गये…
… और वे गोले हाहाकारी ढंग से बैंक में प्रवेश करते चले गये—
भड़ाक
भड़ाक
SWISS BANK
बैंक के अन्दर भौंचक्के खड़े लोगों की…
घिग्घी बंध गई उस समय जब उन गोलों ने लिया वह अद्भुत रूप—
अचंभित खड़े लोगों के दिलो-दिमाग पर कसता चला गया दहशत का शिकंजा—
अपने स्थान से जो भी हिला उसके शरीर में बन जायेंगे सैकड़ों रोशनदान!

साथियो लूट लो बैंक को।
अन्दर लूट रहा था बैंक—
और बाहर घेरा डाल रही थी पुलिस—
SWISS BANK
चप्पे-चप्पे पर फैल जाओ बाहर निकलते ही बैंक लुटेरों को दबोच लेना है हमें ... क्योंकि अन्दर मुठभेड़ हुई तो वहां मारे जायेंगे बहुत से बेगुनाह व्यक्ति।
कुछ ही पलों में पुलिस ने बैंक के चारों तरफ इतना जबरदस्त पहरा डाल दिया था कि चींटी भी वहां से बचकर नहीं निकल सकती थी—
SWISS BANK
जल्द ही बाहर आये "लुटेरे"—
अरे, बैंक में से यह गोले कैसे निकल रहे हैं ... लुटेरे कहां गये?

यही लुटेरे हैं बैंक के सारे "कैश" पर झाड़ू फेरकर आ रहे हैं ये... रोको इन्हें।
फिर क्या था बरस पड़ी गोलियां ही गोलियां—
लेकिन उन गोलियों से कहां बाल बांका होने वाला था उन गोलों का।
पलभर में ही ऐसे आंखों से ओझल हो गये थे वे गोले जैसे गधे के सिर से सींग।
पीछे छोड़ गये थे रहस्य ही रहस्य, रोमांच ही रोमांच—
आग के गोले ही आदमी थे और आदमी ही आग के गोले थे।
आठवें अजूबे से बड़ा अजूबा हो गया।
पूरे विश्व में तहलका मचा दिया उन आग के गोलों ने—
BANK OF PATIALA
लूटे उन्होंने पूरे विश्व में कई नामी-गिरामी बैंक—

वे लुटेरे... वे अजूबे—
जब से स्वामी पापराज ने हमें अपनी तन्त्र शक्तियों के बल पर आग के गोलों में बदलने की शक्ति दी है तब से मालामाल हो गये हैं हम।
सचमुच, विश्व के हजारों बैंक लूटकर दौलत का ऊंचा ढेर लगा लिया है हमने अपने सामने।
टामीटंग के साथ रहोगे तो ऐसे ही मजे करोगे।
अचानक चौंक उठा टामीटंग—
टामीटंग टामीटंग! मेरी बात सुन रहे हो
ओह, स्वामी पापराज
टामीटंग ने तुरन्त ही पापराज की मानसिक तरंगों से सम्पर्क बनाया—
हां स्वामी हां...मैं आपकी बात सुन रहा हूं...आदेश दीजिये।
तुम्हें एक महत्वपूर्ण काम करना है टामीटंग, ध्यान से सुनो...
फिर वह आवाज बोलती रही और टामीटंग सुनता रहा।
सब कुछ सुनने के बाद—
लेकिन हम मनुष्य सर्पमठ में प्रवेश कैसे करेंगे स्वामी?
सचमुच तुम मनुष्य रूप में सर्पमठ नहीं पहुंच सकते, लेकिन मेरे द्वारा दी गई तन्त्र शक्ति का प्रयोग करोगे तो तुम्हें वहां पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

इधर सर्पमठ में–
मुझ अभागिन का यह एकमात्र सहारा है दिव्य बालक… मृत्यु के कगार पर खड़ा है ये, अगर ये चंगा न हुआ तो मैं भी तड़प-तड़प कर इसके साथ दम तोड़ दूंगी।
बेहद मोहक ढंग से मुस्करा कर दिव्य बालक ने अपनी अंगुली उस सर्प बालक के मृत शरीर पर रख दी–
इसी के साथ–
मेरा पुत्र जीवित हो गया, दिव्य-बालक की।
जय!!
गूंज उठा जयघोष–
काश, कोई जान पाता कि खतरा उन विचित्र गोलों के रूप में सर्पमठ में प्रवेश कर चुका है–
और जब तक कोई उस खतरे के बारे में जान पाता तब तक बहुत देर हो चुकी थी–
आह
आह
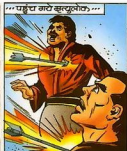
सभी को सतर्क करती चली गई वे चीखें—
बाहर कोई संकट में है, आओ देखें!
बाहर पहुंचने को बेताब प्रहरी...
...पहुंच गये मृत्युलोक...
अन्दर खड़ों को जड़ कर दिया टामीटंग की कहर भरी आवाज ने—
जो भी अपनी जगह से हिला उसका अन्जाम होगा इन जैसा!
कैद कर लो उसे!
मानव हड्डियों का वह विशेष पिंजरा सम्भाले आगे बढ़े बदमाश के रास्ते में जो आया उसे रास्ते से हटाया टामीटंग ने—

दिव्यबालक को कैद किया उन्होंने…
और अपना वही अद्भुत रूप इस्तेमाल कर वहां से रवाना हो गए।
देखने वाले ठगे से खड़े देखते रहने के सिवा कुछ ना कर सके–
भारत! शहर दिल्ली–
स्थान बालभवन–
बाल भवन
जहां हुजूम के रूप में मौजूद थे सैकड़ों बच्चे–
14 नवम्बर जो था आज बच्चों के प्रिय चाचा नेहरू का जन्मदिवस।
लेकिन इन जैसों का यहां क्या काम?
वैगन स्टार्ट रखियो हम अभी आये इसे भरने के लिए बच्चों को लेकर।

हैरान भी न हो पाया गार्ड—
हर समय ड्यूटी देते रहते हो कुछ देर आराम भी कर लिया करो।
दनदनाते हुए प्रवेश कर गये सभी बालभवन में--
मासूम दिलों में बैठ गई दहशत—
अच्छे बच्चों की तरह हमारे साथ चलो बच्चो।
वरना तुम्हारे नर्म-नर्म मांस में गोलियों को घुसने में बड़ा मजा आयेगा
भेड़-बकरियों की तरह वैगन में ठूंस दिया दरिन्दों ने उन मासूमों को—
और फिर—
ओ.के.। टा-टा फिर मिलेंगे।
भागती वैगन के हल्के हिचकोलों पर बल्लियों उछल रहे थे वे सभी—
इन बच्चों को अरेबियन कन्ट्री भेज कर करोड़ों रुपये कमायेंगे हम।

अचानक चीख पड़ा एक—
वो ... वो ... सामने क्या है?
बैरियर! सांपों का बैरियर!
STOP
एक की अक्ल में आई वह भारी समझदारी की बात—
इतने सांप! ... इसका मतलब एक ही है! आ गया नागराज!
नागराज का नाम सुनते ही घिग्घी बंध गई ड्राइवर की—
उस्ताद! गाड़ी रोक रहा हूं मैं।
चुपबे! गाड़ी रोक मत बन्दूक की गोली बना दे और कुचल दे सांपों के बैरियर को!

बन्दूक की गोली बन गई वैगन लेकिन सांपों के बैरियर तक पहुंच न पाई--
मेरे आगमन के बारे में जानकर भी ऐसी गलती कर डाली तुमने!
छनाक
छनाक
एक झटके से रुक गई वैगन से आम की भांति पक कर नीचे आ गिरे सभी--
चलो बाहर!
धड़ाक
तब--
कम से कम इतना तो सोच लेते कि जहां बच्चों पर जुल्म होता है वहां पहुंच जाता है नागराज!
...और तुम जैसे जालिमों का पहुंचाता है जहन्नुम!
आह

कुछ ही पलों में सड़क सूंघ रहे थे सभी बदमाश—
और खुशी से नाच रहे थे बच्चे—
OUR HERO ONLY NAGRAJ.
ए नागराज! तुम ग्रेट हो!
कितना आनन्द आता है फूलों की तरह इन मासूमों को खिल-खिलाता देखकर!
चलो बच्चो वैगन में बैठो, मैं तुम्हें वापस बालभवन छोड़ आऊं!
ठीक तभी गूंजा वह खूंखार स्वर—
इन बच्चों को कहीं पहुंचाने से पहले ही तू नरक में पहुंच जायेगा नागराज!
!?
वहां मौजूद बच्चे ही क्या नागराज भी चौंका उस शख्स को देखकर—
कौन है ये, जो मुझे नरक पहुंचाने के लिए मरा जा रहा है!

...और ये दुबला-पतला आदमी किस बल पर मुझे! नरक...! आह
घ्राक
एक ही वार में हो गया नागराज को उसकी शक्ति का अंदाजा—
ओफ्फ! ऐसा लगा मुझे जैसे कोई रोड रोलर आ टकराया हो मेरे चेहरे से...इसका मतलब असीम ताकत भरी है उसके बांस से शरीर में!
...लेकिन मेरे सर्प उसके सारे कसबल निकाल देंगे।
उफ! सर्पों को तो छलावा बनकर मात दे गया वह।
छलावे की भांति हवा में लहराता आया वह नागराज तक—
ओफ्फ
इस बार नागराज ने अपने तक नहीं पहुंचने दिया उसे—
कुछ वार करने का मौका हमें भी दीजिये श्रीमान!

जीप पर गिरे व्यक्ति ने फुर्ती से सम्भल कर रस्सी के गुच्छे को उठा लिया—
और—
रस्सियों के जाल में कैद होता चला गया नागराज—
ओफ्फ
और फिर आंखों से शोले बरसाते उस शैतान सरीखे शख्स ने अपने हाथों से बरसा दिये घातक हथियार—
उफ! ये हथियार मेरी जीवनलीला खत्म कर डालेंगे।
नागराज तक पहुंचने ही वाले थे वे घातक हथियार कि...
...अपने अद्भुत रूप के साथ आ पहुंची सौडांगी—
सौडांगी के होते नागराज की परछाईं को भी नहीं छू सकते ये हथियार।
अब ये हथियार इसे फेंकने वाले की ही मौत बनेंगे।
क्रोध का तूफान लिये जो पलटी सौडांगी...

ओह! इसका तो रूप बदल रहा है।

और उछल पड़ी सौडांगी तब ... जब उसने पहचाना सामने खड़े उस शख्स को—

सर्पमठ का मुख्य पहरेदार मतांगा।...

...नागराज का दुश्मन!

रहस्यमयी मुस्कराहट आई मतांगा नामक उस इच्छाधारी सर्प के होंठों पर—

नागराज से मेरी कोई दुश्मनी नहीं है सौडांगी! यह तो तुम्हें नागराज के शरीर से निकालने की योजना थी...

सौडांगी को। गम्भीर हो गया नागराज भी—
उफ! दिव्यबालक का अपहरण!
यही तो पता लगाने मैं तुम्हारे पास आया हूं। चूं कि तुम आधुनिक दुनिया में रहते हो इसलिए दिव्यबालक और उसके अपहरणकर्ताओं का पता लगाना तुम्हारे लिए दुष्कर कार्य न होगा।
नागराज से प्रार्थना कर उठी सौडांगी—
हां नागराज, तुम्हें दिव्य-बालक की खोज करने में हमारी मदद करनी होगी... दिव्यबालक को वापस लाना पूरे विश्व की भलाई के लिये भी जरूरी है...
...क्योंकि अगर दिव्यबालक की मृत्यु हो गई तो शैतानी शक्तियां पूरे विश्व को अपने शिकंजे में जकड़ लेंगी... शैतानों का राज हो जायेगा पूरे विश्व पर।
विश्वशान्ति का पुजारी नागराज! भला पीछे रहने वालों में से कहां था--
ठीक है सौडांगी! मैं अपने पूर्ण सामर्थ्यानुसार तुम्हारी सहायता करने को तैयार हूं।

फूल सा खिल गया मतंगा का चेहरा–
धन्यवाद नागराज!
फिर मतंगा ने नागराज को दिखाये दो रेखाचित्र–
ये हैं दिव्यबालक!
...और यह है वह मुख्य अपराधी जो बहुत से सर्पों की लाशों को अपने कदमों तले रौंदकर दिव्य बालक को ले गया!
गम्भीर हो गया नागराज उस रेखाचित्र को देखकर–
इसके हाथों में आधुनिक गन थमी है... इसे ढूंढने में हमें ज्यादा दिक्कत नहीं आयेगी लेकिन इसके लिए हमें मिस्र जाना होगा।
सौडांगी और मतंगा के साथ उड़ चला नागराज पिरामिडों के देश की तरफ–

मिस्र के पिरामिडों की भीड़ से दूर इस रहस्यमयी और खौफनाक स्थान पर बना यह खोपड़ी नुमा अद्भुत पिरामिड–
जिसके अन्दर कैद करके रखा गया था दिव्य बालक को!
पेट में चूहे कूद रहे हैं ना... तो फिर खा ले ये खाना और बुझा ले अपने पेट की आग!
दिव्य बालक ने जो घूरकर देखा खाने की प्लेट की तरफ तो...
...टूट गई प्लेट और फर्श पर बिखर गया रक्त मिला खाना।

जहरीली प्रतीत हुई उसे अबोध के अधरों पर खेलती मोहक मुस्कान —
कब तक ऐसे रहेगा। खाना नहीं खायेगा तो भूखा मर जायेगा तू।
पूर्ववत, मुस्कराते हुये उस मासूम ने अपनी जेब से निकाल ली वह पत्तियां, और उनमें से एक पत्ती तोड़कर मुंह में रख ली —
ओह! देखें इन पत्तियों को खाकर कब तक जिन्दा रहता है तू?
नागराज —
जिसने आज एक बार फिर कदम रखा था मिस्र की धरती पर —
AIR-EGYPT
एक बार फिर काहिरा आ पहुंचा था नागराज।
एयरपोर्ट से बाहर आकर मतांगा वापस लौट गया। रह गये नागराज और सौडांगी —
मिस्र तो हम आ गये नागराज... अब?
अब तलाश करनी है दिव्य बालक के अपहरणकर्ताओं के मुखिया की...
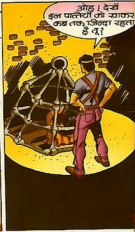
टामीटंग—
आज फिर अपने साथियों के साथ वह बदला हुआ था अद्भुत गोले के उस रूप में—
और आज उनका निशाना था काहिरा स्थित बैंक ऑफ़ इजीप्ट—
BANK OF EGYPT
बैंक के अन्दर पहुंचकर आये सभी अपने वास्तविक रूप में—
जो समझदार होगा वह अपनी जगह से नहीं हिलेगा क्यों— कि जो हिलेगा वह पहुंचेगा सीधा खुदागंज।
बुत बने खड़े लोगों के बीच से होते हुये टामीटंग के साथी पहुंचे स्ट्रॉंगरूम की तरफ—
स्ट्रॉंग रूम के खुलने के साथ ही चीखें उबल पड़ीं सभी के हलकों से—

और ऐसा होता भी क्यों ना स्ट्रॉंग रूम में नोटों की जगह सैकड़ों सर्प जो मौजूद थे...
और मौजूद था नागराज–
आज इन्हें ही लूट कर ले जाओ दोस्तों, ये भी बहुत काम आयेंगे तुम्हारे।
सर्पों के गुच्छे के गुच्छे उछाल दिये नागराज ने —
जिन्होंने छीन ली लुटेरों के हाथों से उनकी गनें–
...तो उसके वारों ने...
और फिर जो उछला नागराज...
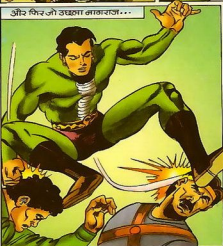
...छीन लिये उनके होश—
फिर पलटा नागराज टामीटंग की तरफ—
बता किसने दी तुम्हें गोलों में बदलने की अद्भुत शक्ति—बता किसके लिए तू ने अपहरण किया दिव्यबालक का...
...और बता कहां रखा है तूने उसे?
दहाड़ा टामीटंग—
तेरे हर सवाल के जवाब में तुझे एक ही चीज मिलेगी नागराज सिर्फ मौत...
...टामीटंग के हाथों एक भयानक मौत।
उगल दी टामीटंग के हाथ में थमी गन ने किरणें—

... लेकिन वे किरणें उसका क्या बिगाड़ पातीं जो था बिजली से भी फुर्तीला...
... सर्पसम्राट नागराज —
ऐसे कब तक बचेगा रे तू नागराज।
इस बार बचने के साथ ही...
नागराज ने टामीटंग पर किया एक प्रचण्ड वार भी—
यही गन है ना जो उगल रही है किरणें...
... और यही थोबड़ा है ना जो कर रहा है बकवास!

अब तू हमारे हर सवाल का जवाब हमें गा-गाकर देगा कमीने।
टामीटंग के नीचे गिरते ही नागराज के शरीर से निकल कर उससे आ लिपटी सौडांगी–
आंखों में क्रोध की ज्वाला लिये बोला था नागराज–
बोल दिव्यबालक का अपहरण करके कहां पहुंचाया है तूने उसे?
बोल वरना गई तेरी गर्दन!
तड़प उठा टामीटंग–
आऽऽ! छोड़ दो मुझे… मैं… मैं सब बताता हूं। आऽ
सब कुछ बताने का तैयार हो गया वह…
लेकिन तभी… हां… ठीक तभी–
फ़टाक
आ
ऐसे फटा टामीटंग का शरीर जैसे फटा हो खून से भरा गुब्बारा–
भौंचक्के से खड़े रह गये नागराज और सौडांगी–
उफ! कैसे हुआ ये अचानक… कैसे फट गया इसका शरीर?
किसने किया ये सब?

यहां था नागराज और सौडांगी के हर सवाल का जवाब—
अपनी तंत्र शक्ति के बल पर अगर मैंने सही समय पर टामीटंग को खत्म न कर डाला होता तो उसने सब कुछ बताकर मेरे सारे किये-कराये पर पानी फेर दिया होता।
चिन्ताओं की सैकड़ों रेखाओं से भर गया पापराज का चेहरा—
नागराज दिव्यबालक की खोज में निकल पड़ा है और नागराज जिसके पीछे पड़ जाये उसे पाताल से भी खोद निकालता है...
...इसलिए इस दिव्य-बालक को खत्म करना अब बहुत जरूरी है... लेकिन ऐसा हो कैसे? कैसे खत्म किया जाये उसे?
अचानक धमाका सा हुआ पापराज के मस्तिष्क में—
देवता के पास ही है दिव्यबालक को खत्म करने का उपाय... दूसरा उपाय।
एक पल बाद ही देवता की प्रतिमा के सामने खड़ा गिड़गिड़ा रहा था पापराज—
नागराज दिव्यबालक की खोज में निकल पड़ा है देवता और इससे पहले वह उस तक पहुंच जाये दिव्यबालक को खत्म करना जरूरी है...

...उसे तत्काल खत्म करना होगा देवता... दूसरा उपाय बताइये।
देवता ने बताया दूसरा उपाय—
दिव्यबालक को खत्म करने के लिए तुम्हें पवित्र खंजर प्राप्त करना होगा पापराज!
ऐसे उछला पापराज जैसे दहकता अंगारा बन गई हो उसके कदमों तले की धरती—
पवित्र खंजर!
...और उस मन्दिर के वृत्तम व मौत से लबा-लब भरे रास्ते से होकर पवित्र खंजर तक पहुंच जाये ऐसा मनुष्य अभी पैदा नहीं हुआ पृथ्वी पर।
गलत... एकदम गलत! पृथ्वी पर एक ऐसा मनुष्य है जो पवित्र खंजर के बीच में आने वाली हर मुसीबत को धता बताकर उस तक पहुंच सकता है।
लेकिन पवित्र खंजर मुझे प्राप्त कैसे होगा देवता... पवित्र देवता "खोनसू" के जिस मन्दिर में वह रखा है मेरी शैतान शक्तियां तो उसके आस-पास भी नहीं फटक सकतीं...

क--कौन है वह मनुष्य! ...मुझे बताइये देवता...मुझे बताइये!
उतावलेपन का जैसे दौरा पड़ गया था पापराज पर--
और तब... जब देवता ने बताया पवित्र खंजर को प्राप्त करने वाले का नाम तो फट पड़ीं पापराज की आँखें, सन्न रह गया उसका दिमाग--
व...वो लेकर आयेगा खंजर।
हां, लेकिन हमें शक है कि तुम उसे खंजर लाने के लिए मजबूर कर पाओगे।
शब्द नहीं जैसे धधकता लावा निकला पापराज के मुख से--
अगर "खोनसू" के मन्दिर से पवित्र खंजर लाने वाला वही है तो वह जरूर आयेगा देवता!
इतना मजबूर कर दूंगा मैं उसे कि पवित्र खंजर के साथ वह अपने प्राण भी लाकर मेरे कदमों में डाल देगा।
अंगारे सा धधक रहा था पापराज का चेहरा--

इधर काहिरा के फाइव स्टार होटल अलहबीबा में-
रात काफी हो चुकी है सौडांगी अब सो जाओ। कल सुबह दिव्यबालक को ढूंढने का कोई और साधन ढूंढेंगे।
ओ.के. नागराज गुडनाइट।
HOTEL
कुछ ही पलों बाद गहरी नींद में सो चुके थे नागराज और सौडांगी-
अचानक वहां गूंजी उस चीख ने उछाल दिया नागराज को-
नागराज... आह...
सौडांगी!... क्यों चीखी वह?
जब नागराज को पता चला सौडांगी के चीखने का कारण तो सनसना उठा वह-
सौडांगी!
नागराज!
सौडांगी की तरफ बढ़े नागराज के कदमों से आ लिपटी वह अजीब सी रस्सी और-

धड़ाम से नीचे आ गिरा नागराज—
तुम्हारा एक इन्च भी आगे बढ़ना सौडांगी को मौत के मुंह में ले जायेगा नागराज।
ओफ्फ
नागराज को दिखाई दिया वह रहस्यमयी शख्स—
कौन हो तुम?
क्या चाहते हो?
पापराज! क्या चाहता है ये भी अभी पता चल जायेगा।
पापराज के इशारे पर जकड़ लिया गया नागराज को—
और तब...
ऐसा ही सौडांगी के साथ किया पापराज ने—
...तब समा गई वह अद्भुत किरण नागराज के जिस्म में—

फिर बोला वह
स्वर में—
जो किरण तुम दोनों के शरीरों में समा गई है नागराज वह तुम्हारे शरीर में दौड़ते जहर की गुजरते पल के साथ पानी करती चली जायेगी। नामो-निशान मिटा देगी वह तुम्हारा... खत्म कर डालेगी वह तुम्हें।
...अब इस मौत से बचने का एक ही उपाय है नागराज, तुम्हें देवता "खोनसू" के मन्दिर से पवित्र खंजर लाना होगा...
...सिर्फ पवित्र खंजर के छूने से ही तुम्हारे शरीर से उन किरणों का प्रभाव समाप्त हो सकता है।
...अब तुम्हारी और सौडांगी की जिन्दगी तुम्हारे हाथ में है नागराज, या तो पवित्र खंजर ले आओ या फिर तड़प-तड़प कर मरने की तैयारी कर लो!
हा हा हा
ठहाका लगाते अदृश्य होते चले गये पापराज और उसके साथी—
साथ ही आज़ाद हो गये नागराज और सौडांगी भी—

सनसना रहे थे नागराज और सौडांगी के मस्तिष्क
अब क्या होगा नागराज?
मेरी तो कुछ, समझ में नहीं आ रहा कि क्या किया जाये।
बोली सौडांगी—
इस समस्या से निपटने के लिए हमें तुरन्त सर्प-मठ पहुंचना होगा नागराज वहीं पहुंच कर कोई उपाय सोचा जा सकता है।
तुरन्त ही सर्पमठ की तरफ रवाना हो गये सौडांगी और नागराज
जहरीली मुस्कान खेल रही थी पापराज के अधरों पर
इन पत्तियों को खाकर कितने दिन जीवित रहेगा तू मैंने नागराज को अपने जाल में फंसाकर पवित्र खंजर लाने के लिए भेज दिया है ...और जिस दिन उस खंजर को पा लूंगा वह तुम्हारी जिन्दगी का आखिरी दिन होगा।
इधर दिव्यबालक—
जिसने भूख का अहसास होने पर अपने मुंह में रख ली थी एक और पत्ती—
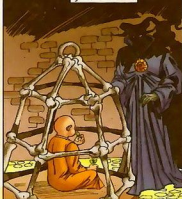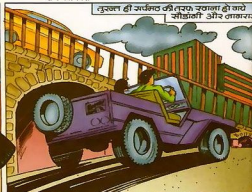
amaan.cooldude18
सर्पमठ, जहां गूंज रही थी मठ के मुख्य पुजारी की धीर-गम्भीर आवाज—
ओह! तो ये सब पापराज का किया-धरा है। वह पवित्र खंजर से दिव्यबालक की हत्या कर पूरे विश्व पर राज करने के सपने देख रहा है...
...अब तो तुम्हें "खोनस्" देवता के मन्दिर से पवित्र खंजर लेके अवश्य आना होगा नागराज!
ये.. ये आप क्या कह रहे हैं पुजारी जी। हम दोनों सिर्फ अपने प्राण बचाने के लिये पवित्र खंजर ले आयें... ताकि पापराज उसे हमसे हथियाकर हत्या कर डाले दिव्यबालक की।
दृढ़ता से भर गया मानवता के पुजारी का स्वर—
मैं पवित्र खंजर नहीं लाऊंगा पुजारी जी अपनी जान बचाने के लिए, मैं पूरे विश्व को संकट की खाई में नहीं धकेल सकता।
मैं तुम्हारे जज्बातों को समझता हूं नागराज, लेकिन जैसे पापराज को दिव्यबालक की हत्या करने के लिए पवित्र खंजर की आवश्यकता है... ठीक उसी तरह हमें भी पापराज को समाप्त करने के लिए वह खंजर ही चाहिए...
अपनी बात में छिपी रहस्य की गांठ खोली पुजारी ने—
पापराज सैकड़ों शैतानी शक्तियों का स्वामी है, ...उसे और उसकी शक्तियों को सिर्फ पवित्र खंजर से ही समाप्त किया जा सकता है।...
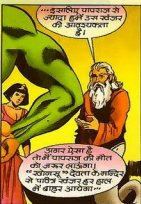
amaan.cooldude18
...इसलिए पापराज से ज्यादा हमें उस खंजर की आवश्यकता है।
...चाहे इसके लिए मुझे मौत को भी बेमौत क्यों ना मारना पड़े।
अगर ऐसा है तो मैं पापराज की मौत को जरूर लाऊंगा। "खोनसू" देवता के मन्दिर से पवित्र खंजर हर हाल में बाहर आयेगा...
तुरन्त ही सौडांगी के साथ निकल पड़ा नागराज उस स्थान की तरफ जो था...
खोनसू देवता का मन्दिर--
पवित्र खंजर प्राप्त करने तुम यहां आ तो चुके हो नागराज, लेकिन उस तक पहुंचने वाली उन मुश्किलों को पार भी कर पाओगे जिन्हें मौत के नाम से पुकारा जाता है।

सफर पर निकल चुका हूं पुजारी जी, मंजिल के रूप में जिन्दगी मिलेगी या मौत यह तो वक्त ही बतायेगा।
मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी नागराज।
हां सौडांगी, किन्तु नागरूप में।
सौडांगी समा गई नागराज के जिस्म में।
खोलसू मन्दिर के सामने पहुंचा नागराज—
पहाड़ की तरह सामने खड़ी इस दीवार ने रोक रखा है अन्दर जाने का रास्ता ...
...लेकिन इस दीवार में रास्ता होगा कहां?

रास्ते की खोज में दीवार के जर्रे-जर्रे की खाक छानने के बाद भी निराश ही हुआ नागराज —
क्या मैं इस दीवार में अन्दर घुसने का रास्ता कभी ढूंढ़ पाऊंगा?
अचानक एक विचार कौंधा नागराज के मस्तिष्क में —
ओह! ये आइडिया पहले दिमाग में क्यों नहीं आया?
...नागराज उड़ाने लगा विष फुंफकार का तूफान सा —
हवा के साथ दीवार में समाने लगी विष फुंफकार की पतली लकीर भी —
हवा अपना रास्ता बना ही लेती है।
फिर नागराज ने लगा दी पूरी शक्ति...

amaan.cooldude18
...और प्राप्त की सफलता–
अब मन्दिर के अन्दर था नागराज --
लेकिन आगे बढ़ने से पहले ही उसे सुनाई दी सैकड़ों अजगरों के एक साथ फुंफकारने की आवाज–
फूं फूं ऽऽऽ
?!
घूमा नागराज और सन्न रह गया–
ओह! नहीं!
इधर नागराज की पहली सफलता की खबर पाकर नाच ही उठा था पापराज–
वाह! ... नागराज मन्दिर में प्रवेश करने में सफल हो गया। ... इसका मतलब हुआ सफलता नागराज के कदम अवश्य चूमेगी!
शाबाश नागराज! बढ़े जाओ बढ़े जाओ।

कैसे बढ़ता नागराज, उसके तो कदम ही उखड़ चुके थे—
भड़ाक
नागराज जैसे जाँबाज की रूह फना हो गई थी तब जब उसे नजर आया वार करने वाला—
उफ! ममी! सैकड़ों वर्षों से सुरक्षित रखी गई लाश!
ये मुझे भी लाश में बदल देगी अगर मैंने इसे खत्म ना किया तो।

...जो किया नागराज ने वार तो --
ओह, इसके शरीर में तो मेरा पूरा हाथ ही धंस गया... यानि पट्टियों के ढेर के सिवा कुछ नहीं है इसमें।
एक बार फिर घूमा ममी का हाथ और एक बार फिर हवा में नजर आया नागराज —
और अब...
ना सिर्फ बचाना होगा—
...बल्कि इसके थोबड़े पर उगलना होगा जहर का तूफान भी।
लेकिन जल्द ही हुआ नागराज को अपनी गलती का अहसास —
मैं भी कितना मूर्ख हूं जिसे मरे हुये सैकड़ों वर्ष हो चुके हैं उसे मारने की सोच रहा हूं।

अचानक फूल सा खिल गया नागराज का चेहरा—
इस ममी को मारा नहीं जा सकता मगर जलाया जरूर जा सकता है।
अगले पल छलावे की तरह हवा में लहराया नागराज—
और—
शानदार उपयोग किया नागराज ने अपने हाथ में थमी मशाल का—
धूं-धूं करके जल उठी ममी—

और नागराज—
अब बढ़ना चाहिये मुझे आगे!
कुछ पलों बाद ही—
पवित्र खंजर! ...मुझसे सिर्फ कुछ ही कदम दूर है!
नागराज ने बढ़ाया अगला कदम—
और इसके साथ ही—
अब नागराज को पता चला पवित्र खंजर और अपने बीच की दूरी का--
अपना बढ़ा हुआ कदम तुरन्त ही पीछे ना हटाया होता मैंने तो खंजर तक नहीं यमराज तक पहुँचता मैं।

अब तो सर्पों का पुल बनाकर ही पार की जा सकती है ये खाई!
सर्पों के सहारे खाई पर पुल बनाने में प्रयासरत नागराज...
... स्तब्ध रह गया अपने सर्पों का हाल देखकर—
उफ! खाई पर अदृश्य अग्नि का जाल बिछा हुआ है!
गहरी सोच में डूब गया नागराज—
इस अद्भुत खाई को पार करने का कोई ना कोई तो रास्ता जरूर होगा, लेकिन कहां?...
ये तलाश करना होगा मुझे!
एक बार फिर अपनी सर्पसेना को निकाला नागराज ने—
ये क्या कर रहा है नागराज? क्यों अपनी सर्पसेना को शहीद करने पर तुला हुआ है वह?

जल्द ही सफलता की चमक से जगमगा उठी नागराज की आंखें-
अदृश्य रास्ता!... तो मेरा सोचना ठीक निकला!
अब इस रास्ते को अपनी आंखों से ओझल नहीं होने दूंगा मैं।
अदृश्य रास्ते को सदृश्य करने के लिये नागराज ने इस्तेमाल किया वह अद्भुत तरीका-

और पार कर गया खाई—
लेकिन इतना आसान कहां था पवित्र खंजर को प्राप्त कर लेना—
शरीर के साथ-साथ झनझना उठी नागराज के दिमाग की प्रत्येक नस—
खंजर के आस-पास अदृश्य किरणों का जाल है... आत्महत्या करने के समान होगा ऐसे में खंजर की तरफ बढ़ना।
लेकिन हर सुरक्षा-व्यवस्था में कोई ना कोई ऐसा छेद जरूर होता है जिसकी वजह से ध्वस्त होती है सारी सुरक्षा-व्यवस्था... इसलिए मुझे खंजर के आस-पास बने किरणों के जाल में उस "छेद" को ढूंढ़ना होगा...
और इसके लिए मुझे इस्तेमाल करना होगा सर्प गेंद का।
कुछ सर्पों की गेंद सी बनाकर...

amaan.cooldude18
...जो उछाली नागराज ने तो—
मिल गया, किरणों की दीवार में एक बहुत बड़ा छेद मिल गया।
अब पवित्र खंजर तक पहुंचने में ज्यादा देर नहीं लगेगी मुझे।
एक पल बाद ही—
खंजर के आस-पास किरणों की दीवार बनाने वाले ने सपने में भी ना सोचा होगा कि इतनी ऊंची सपाट छत से कोई इस तरह भी खंजर तक पहुंच सकता है।
उत्तेजना से कांपते हाथों से नागराज ने उठा लिया वह... पवित्र खंजर—

सफल व सकुशल वापस लौटे नागराज के जिस्म से बाहर आ गई सौडांगी—
ओह नागराज! इस खंजर के रूप में तुम अपने लिये जिन्दगी और पापराज के लिये मौत ले आये हो।
हमें इस पवित्र खंजर को तुरन्त सर्प मठ पहुंचाना होगा ताकि यह सुरक्षित रह सके।
तभी—
सर्पमठ तुम नहीं तुम्हारी आत्माएं पहुंचेंगी और वो भी खाली हाथ क्योंकि तुम्हें मौत देकर खंजर ले जायेगा…
…पापराज!
पापराज को देखकर आग बबूला हो गया नागराज। कर दिया उसने एक शक्तिशाली प्रचंड वार—
नागराज के होते तेरा ये सपना पूरा हो जायेगा, तूने ये सोच कैसे लिया कमीने?
सौडांगी झपटी पापराज के साथियों पर—
खंजर नहीं, मौत
तुम्हें।

पल-प्रतिपल हावी होते चले आ रहे थे नागराज और सौडांगी–
अचानक नागराज के शरीर से लिपटती चली गई वह घातक रस्सी–
और जिसके हाथ में थमी थी उसका नाम था–
फन्देबाज! और फन्देबाज ने जिसे भी अपने फन्दे में फंसाया वह पहुंचा यमलोक!
असहाय हो चुके नागराज पर फेंका पापराज ने किरणों का रेला–
अब मरेगा तू नागराज!
किरणों का वह रेला नागराज को कोई क्षति पहुंचा पाता–
उससे पहले ही सौडांगी झेल गई मौत के उस तूफान को–
सौडांगी!
आह

जुनूनी हो गया नागराज सौडांगी की मौत को देखकर —
खटाक
सौडांगी!
अब सिर्फ सौडांगी का ही ख्याल था नागराज को —
तभी तो उसके हाथ से निकल गया पवित्र खंजर —
ये पवित्र खंजर मुझे दे दो नागराज!
खंजर पाते ही एक पल भी वहां नहीं रुके पापराज और उसके साथी —
सौडांगी के शरीर को सम्भाले नागराज ने उनके पीछे लपकाया नागानन्द को —
जा नागानन्द हर बार की तरह इस बार भी सफल होकर लौटना है तुझे।
सौडांगी की हालत पर रो पड़ीं नागराज की आंखें —
उफ! सौडांगी मुझे छोड़ कर क्यों चली गई तुम! आह!
नागराज को दुख के भंवर से निकाला सर्पमठ के पुजारी ने —
सौडांगी की मृत्यु अत्यंत दुख का विषय है नागराज, लेकिन यह समय दुखी होकर यहां बैठे रहने का नहीं, बल्कि दिव्यबालक को बचाने का है।
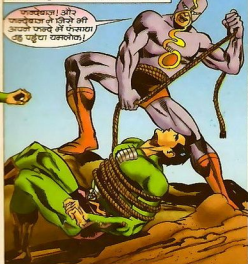
...क्योंकि पापराज पवित्र खंजर प्राप्त करने में सफल हो गया है, अब वह किसी भी क्षण दिव्यबालक की हत्या कर सकता है।
आंसुओं से भरा अपना चेहरा ऊपर उठाया नागराज ने—
...ऐसी मौत दूंगा मैं उन्हें कि थर्रा उठेगा मौत का कलेजा भी।
मुझे तेरी कसम है सौडांगी पापराज और उसकी शैतानी शक्तियों को चुन-चुनकर खत्म करूंगा मैं...
ऐसा रौद्र रूप कभी किसी ने ना देखा होगा नागराज का—
पवित्र खंजर लेकर जो चला सौडांगी तो लगा उठा एक कहकहा पापराज—
हा-हा-हा अब खत्म होगा दिव्यबालक और फिर पूरे ब्रह्माण्ड पर राज करेगा पापराज हा-हा-हा।
इधर पापराज—
इस पवित्र खंजर को उस दिव्यबालक के सीने में पेवस्त करके उसकी कहानी खत्म कर दो सौडांगी।
जो आज्ञा स्वामी!
ठीक तभी वापस लौटा नागानन्द—
तुम्हारे शरीर में भरी तेजी बता रही है नागानन्द कि तुम सफल होकर लौटे हो... मुझे भी वहां ले चलो नागानन्द, बहुत उतावला हूं मैं उस पाप की नगरी को तबाह कर देने के लिए।
अन्दर कहकहे लगाता पापराज...
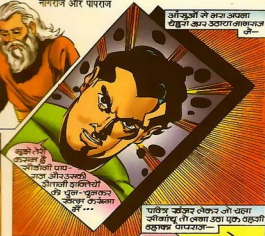
क्या जानता था कि अपने सीने में प्रतिशोध की धधकती आग लिये बाहर आ पहुंचा था नागराज—
लेकिन इस तरह आने वालों के स्वागत का पूरा इन्तजाम किया हुआ था पापराज ने—
पलभर में ही घिर गया नागराज—
खतरा!
लेकिन आज हर खतरे को ध्वस्त कर...
...उन्हें अपने कदमों तले रौंद आगे बढ़ जायेगा नागराज।

मेरी विष फुंफकार की इतनी मात्रा तो पत्थर को भी पिघला सकती है कमीनो!
अभी एक खतरे से निपटकर खड़ा भी नहीं हुआ था नागराज कि आ पहुंचा दूसरा खतरा...
?!
फन्देबाज के रूप में—
तार के इन फन्दों ने सैकड़ों गर्दनें धड़ों से उतारी हैं बच्चे!
एक बार पहले भी तेरे फन्दे में फंसकर सौडांगी को गवां चुका हूं मैं, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।
नागराज द्वारा दिये गये तेज झटके से...
उछला नागराज तक जो फन्देबाज तो उसे उसी के फन्दे में फंसा लिया नागराज ने—
देख फन्देबाज ये फन्दा अब मेरी गर्दन उतारता है...
...या तेरी।

फन्देबाज की गर्दन को अपने पैरों तले रौंदकर अन्दर की तरफ बढ़ा नागराज—
अन्दर दिव्यबालक तक पहुंच चुका था सीगांचू नामक वह हत्यारा—
समझ में नहीं आता स्वामी ने इस चूहे को मारने के लिये इतना समय खराब क्यों किया पहले ही कह दिया होता तो मैंने झट से उड़ा दी होती इसकी गर्दन!
लेकिन अब क्या हो सकता था, बहुत देर हो चुकी थी अब तो...
दिव्यबालक के बारे में जानता तो उसके पास हरगिज न पहुंचा होता सीगांचू—
—दिव्य बालक का गुलाम बन चुका था सीगांचू—
पवित्र खंजर को एक तरफ फैंक कर झुक गया था वह दिव्यबालक के सामने—
ठीक तभी अपनी अड़चनों को हटाकर वहां आ पहुंचे नागराज ने दबोच लिया सीगांचू को—
तोड़ डाली होती नागराज ने सीगांचू की गर्दन अगर उसे रोक ना लिया होता दिव्यबालक ने—
इसे छोड़ दो नागराज! ये हमारे सम्मोहन में है।... ये हमें बाहर निकालने में तुम्हारी मदद करेगा।
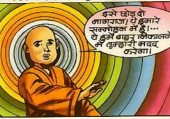
सचमुच सीगांचू जुट गया नागराज की मदद करने में—
पलभर बाद ही आजाद था दिव्यबालक—
पवित्र खंजर उठाओ नागराज!
झपटकर पवित्र खंजर उठाया नागराज ने—
अब इस खंजर से खाक करूंगा मैं पापराज का सीना—
…मुझे बताओ कहां मिलेगा वह?
सीगांचू के बताये रास्ते पर भाग खड़ा हुआ नागराज—
सम्भल पापराज! तेरे साथ तेरे पाप का भी अन्त करने आ रहा है नागराज!
बुरी तरह बौखला गया पापराज पवित्र खंजर को नागराज के हाथ में देखकर—
नागराज! एक बार तुझे जीवित छोड़ने की भूल कर चुका हूं मैं, लेकिन अब…

...अब मरेगा तू पापराज के हाथों से।
भयानक! भयंकर! खौफनाक! दिलदहलाऊ! रूप में बदलता चला गया पापराज...
और उसने जो किया वार तो बच ना सका नागराज—
नागराज एक तरफ...
और उसके हाथ से छूटा पवित्र खंजर दूसरी तरफ जा गिरा—

नागराज ने किया
मुकाबला करने का प्रयास तो—
इस शैतान का हर वार यूं ही विफल करना होगा मुझे।
ओफ्फ!
ज्यादा देर बचने में सफल नहीं हो पाया नागराज—
अब देखते रहने के सिवा क्या कर सकता था नागराज—
अब कोई चमत्कार ही मुझे इसके हाथों से बचा सकता है।
और सचमुच चमत्कार ही तो हो गया था सूखे पत्तों की भांति उड़ गये नागराज के ऊपर पड़े भारी पत्थर—

नागराज और पापराज एक साथ ही घूमे चमत्कार करने वाले की तरफ —
दिव्यबालक!
दिव्यबालक!
चीखा वह दिव्यबालक —
पवित्र खंजर सम्भालो नागराज! उसी से मारा जा सकता है इस शैतान को!
पवित्र खंजर को नागराज की तरफ लहराकर एक और चमत्कार किया था दिव्यबालक ने —
हवा में लहराये पवित्र खंजर को हवा में ही लपका नागराज ने…
…और बचकर शैतान पापराज की घातक किरणों से…
…मूंठ तक घुसेड़ दिया पवित्र खंजर पापराज के सीने में —
आहहं

शैतान पापराज की भयंकर चीखों से थर्रा उठी उस विचित्र पिरामिड की दरो-दीवार—
आ गया जैसे भूचाल!
धड़ाम
भागो नागराज, पापराज के साथ ही खत्म होने जा रही है उसकी पाप की दुनिया!
धड़ाम
दिव्यबालक को लेकर पिरामिड से बाहर ही निकला था नागराज...
...कि हुआ वह धमाका जिसने तबाह कर डाला पापराज और उसकी सारी शैतानी दुनिया को—
धड़ाम
फिर सर्पमठ में—
दिव्यबालक सही-सलामत वापस लौट आया और पापराज समाप्त हुआ... लेकिन मुझे दुख है कि इसके लिए मुझे अपनी प्रिय शिष्या सौडांगी की कुर्बानी देनी पड़ी...
...सौडांगी की मौत को जीवन भर नहीं भुला पाऊंगा मैं।
किस सौडांगी की मौत की बात कर रहे हो नागराज...

...मैं तो जीती-जागती तुम्हारे सामने खड़ी हूं!
सो... सौडांगी!
त... तुम्हें तो अपनी आंखों से मरता देखा था मैंने... फिर दुबारा जिन्दा कैसे हो गईं तुम?
नागराज के सवाल के जवाब में...
सौडांगी ने उसकी तरफ उंगली उठा दी जिसके अधरों पर नृत्य कर रही थी चित्ताकर्षक मुस्कान--
दिव्य बालक!
और तब वह नागराज जो पूरे विश्व में अपराधियों के काल के नाम से प्रख्यात था, जिसे देखकर भय से थर-थर कांप उठते थे दुर्दान्त, निर्मम हत्यारे,
...वही नागराज, किसी मासूम की भांति किलकारी मारकर चीख उठा था--
दिव्य बालक!
जिन्दाबाद!!
(समाप्त)